ISSN No. 2583-3316

औषधीय सब्जी कुंदरू की उन्नत काश्त तकनीक

नील कमल पन्द्रे[1*], विशाल मेश्राम[2], आर. पी.[3] अहिरवार, प्रणय भारती[4] एवं केतकी धूमकेती[5]

[1,2,3,4 & 5] कृषि विज्ञान केन्द्र, मण्डला, म.प्र.

पत्राचारकर्ता : nk.pandre@gmail.com

परिचय

कुंदरू एक लोकप्रिय, बहुवर्षीय, शीतोष्ण सब्जी है, जिसका वानस्पतिक नाम *काकसीनिया ग्रेनडिस* (*Coccinia Grandis*) तथा कुल *कुकुर बिटेसी (Cucurbitaceae)* है। प्राचीनकाल से हमारे देश में कुंदरू की खेती की जाती है तथा इसकी उत्पत्ति स्थान भारत है। कुदंरू का फल स्वाद में ककड़ी के समान होता है। कुदंरू और ककड़ी के बीच अंतर उनका आकार का होता है। कुदंरू का फल सिर्फ 2-3 इंच लंबा, खीरे से छोटा होता है। वर्तमान समय में यह काफी लोकप्रिय है तथा दक्षिण भारतीय व्यंजन सांभर में इसका भी उपयोग किया जाता है। इसके अलावा इसकी सब्जी भी काफी रूचिकर होती है। कुंदरू फल में मुख्य रूप से कैल्शियम, विटामिन ए तथा सी प्रचुर मात्रा में भी पाया जाता है। इसके बेल में सीधे चढ़ाई के गुण हैं और यह बाड़, पेड़ों, झाड़ियों और अन्य सहारा पर आसानी से फैल जाती है। इस सब्जी का उपयोग भारतीय व्यंजनों में किया जा रहा है और इनकी पत्तियों, तने एवं जड़ों का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में किया जाता है।

कुदरू का चिकित्सकीय महत्व

कुंदरू का प्राचीन काल से ही आयुर्वेद में उपयोग किया जाता है। कुंदरू का पूरा पौधा औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। कुंदरू कब्ज़कारक, पित्त रोगों में लाभकारी, मधुमेय रोग में शक्कर के स्तर को कम करने वाला एवं ज्वरनाशक फल होता है। पत्ते, फल और जड़ें मधुमेह रोग में उपयोगी होता हैं। पौधे की पत्तियों का उपयोग दाद, खाज, साइनस, यूटीआई और साँस की बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। पौधो के तने में शरीर पर ऐंठन-रोधी, कफ़ निस्सारक और मधुमेह-रोधी क्रिया होती है। इसके फल पित्त और रक्त के रोगों में उपयोगी होते हैं। इसकी पत्तियों का लेप त्वचा रोगों पर बाहरी रूप से लगाया जाता है। पौधो के हरे फलों का उपयोग जीभ के घावों के इलाज के लिए किया जाता है। फल चबाने से जीभ के छालों से राहत मिलती है

भारत में कुंदरू का उत्पादन तमिलनाडू, कर्नाटका केरल, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, तेलांगना तथा पश्चिम बंगाल में प्रमुखता से किया जाता है। भारत के अलावा अन्य देश जैसे उष्णकटिबंधीय अफ्रीका, मलेशिया और अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और चीन में भी इसकी खेती की जाती है। कुंदरू को अलग-अलग स्थानों पर अलग नाम से जाना जाता है, जैसे टिण्डारा, रोण्डी, कोव्यक्का, डोंडाकया, तेलाकुचा, तेन्दली आदि।

जलवायु : कुंदरू की खेती पूरे वर्ष की जाती है। कुंदरू के बेल एवं फल के अच्छी बढ़वार के लिए सर्द तथा गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। कुंदरू की खेती पूरे वर्ष की जाती है किन्तु ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु कुंदरू के उत्पादन के लिए सर्वोत्तम पाया गया हैं। कुंदरू के उत्पाद हेतु एक आदर्श तापमान 20 से.ग्रे.-32 से. ग्रे. उपयुक्त होता है।

भूमि : अच्छी जलवायु निकास वाली बलुई दोमट मृदा इसके उत्पादन के लिए उपयुक्त होती है। जिसका पी. एच. मान 6.0 से 6.5 के मध्य हो तो उत्तम मानी जाती है। मिट्टी में जीवांश की मात्रा अच्छी होना चाहिए। भारी चिकनी मिट्टी, अम्लीय और क्षारीय मिट्टी इसकी उत्पादन पर विपरीत प्रभाव डालती है।

ISSN No. 2583-3316

उद्यानिकी क्रियाऐं

कुंदुरू के प्रमुख किस्म : कुंदरू को मुख्य रूप से इसके फल की दिखावट से वर्गीकृत किया जाता है, धारीदार कुंदरू और गैर-धारीदार कुंदरू। धारियों वाले फल धारीदार कुंदरू के अंतर्गत आते हैं, सादे चमड़ी वाले, हरे फल गैर-धारीदार कुंदरू के अंतर्गत आते हैं। अधिकतर यह देखा गया है कि स्थानीय किस्मों का प्रयोग किया जाता है लेकिन अधिक उत्पादन लेने हेतु इसकी नई किस्मों का विकास किया गया है, जिनमें शुलभा, इंदिरा कुंदरू-5, इंदिरा कुंदरू-35 है। उड़िसा राज्य के लिये- अर्का नीलांचल कुन्खी, अर्का नीलांचल सबुजा की प्रजाति विकसित की गयी है, जिसकी (उच्च उत्पादन क्षमता- 200-250 क्विं/हे.) है।

प्रसारण विधि : कुंदरू को दो तरीको बीज तथा कलमों द्वारा प्रसारित किया जा सकता है। कुंदरू का प्रसारण सामान्यतः विधि द्वारा की जाती है।

बीज द्वारा : बीज से बुवाई के लिए बीज निकालने के लिए पके हुए, लाल रंग के कुंदरू फल चयन करें। आदर्श अंकुरण तापमान 15-27° से. ग्रे. के बीच होता है। बीज की बुवाई चरम ग्रीष्मकाल को छोड़कर सभी मौसम में किया जा सकता है। गर्म जलवायु में गर्मी को छोड़कर, तापमान इष्टतम होने पर रोपाई करें। ठंडे क्षेत्रों में रोपाई से पहले आखिरी ठंड गुजरने के बाद रोपाई करें। बीज के माधयम से प्रसारित किया पौधा स्थापित होने में एक वर्ष से अधिक समय लेता है। यह बीज से प्रसारित पौध का प्रमुख अवगुण हैं।

कलमों द्वारा : रोपण हेतु कलम तना तथा जड़ों से प्राप्त किया जाता है। कलम 20-25 से.मी. लम्बी तथा मोटाई 2 से.मी., जिनके कम से कम 4-5 गाँठें होना चाहिए। कलम के लिए चुनी गई शाखाओं का परिपक्व होना आवश्यक है। जड़ से लिए जाने वाला कलम की लम्बाई कम भी हो सकता है, लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कलम में तीन गाँठें आवश्यक रूप से होना चाहिए। तैयार कलम में कम से कम 4-6 पत्तियों की आवस्था में रोपण करना चाहिए।

रोपण विधि : तैयार कलम को लगाने के लिए पहले 30 से.मी. ऊंची, 60 से.मी. गोलाई में थाले बना लिये जाते हैं। इन तैयार थालों में कलमों को 6 से.मी. गोलाई में लपेटकर गहराई पर रोपण किया जाता है। एक खेत में मादा और नर पौधों की आबादी का अनुपात 10:1 होना चाहिए। चूँकि कुदंरू के पौधे बारहमासी होते हैं, इसीलिये हर 4 साल के बाद पुनः रोपण करना चाहिए। पौधो की लताओं को 2 मीटर बाँस द्वारा सहारा दिया जाना चाहिए।

पौध अंतराल : कतार से कतार की दूरी 3 मी. तथा कलम से कलम की 3 मी. के अन्तराल से इनका रोपण करना उपयुक्त रहता है।

कलम लगाने का उपयुक्त समय : रोपण बरसात के मानसून शुरू होने से पहले (जून से जुलाई) या बसंत के मौसम फरवरी से मार्च में किया जाता है।

खाद एवं उर्वरक : कुंदरू की फसल से सफल उत्पादन के लिए 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उपयोग करना उपयुक्त होता है। फॉस्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा और नत्रजन की आधी मात्रा फसल रोपण के समय तथा बाकी की नत्रजन की मात्रा को चार बार में जून या जुलाई से प्रति माह देना चाहिये। इसके अलावा प्रति गड्ढे (प्रति पौध) में 10 किलोग्राम गोबर की खाद भी प्रति पौध/कलम रोपण के पहले देनी चाहिये।

मंडप बनाना एवं कटाई-छटांई : बेल लगाने के 15-20 दिन पश्चात् बेलों में अंकुरण प्रारंभ हो जाता है। बेल जब लगभग 1 फीट के होने लगे तो लकड़ी से सहारा देना चाहिए जिससे ऊपर लम्बाई में बड़वार करें। बेल को चढ़ाने के लिए 2 मी. की ऊँचाई पर बांस तथा लकड़ी की सहायता से मंडप बना देना चाहिए। जिसमें बेल अच्छे से फैल सके। रोपण के तीन माह पश्चात् इसमें फलन शुरू हो जाता है। फरवरी-

मार्च माह में भूमि सतह से जब एक फलनपूर्ण हो जाये तो 50-70 से.मी. बेल छोड़कर ऊपरी भाग को काट देना चाहिए।

सिंचाई : कलम रोपण के तुरंत बाद सिंचाई करना चाहिए। वर्षा ऋतु में पौधों के सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। गर्मी के मौसम में एक सप्ताह के अंतराल या आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करना चाहिए। सिंचाई करते समय यह ध्यान रखें कि जल निकास की उचित व्यवस्था हो। खेत में पानी नहीं भरना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन : बेल की वृद्धि के प्रारंभिक अवस्था में निड़ाई-गुड़ाई करके खरपतवारों का नियंत्रित करना चाहिए।

कीट नियंत्रण एवं रोकथाम : कुंदरु उत्पादन के दौरान माहो, सफेद मक्खी, थ्रिप्स तथा मकड़ी का प्रकोप प्रमुख रूप से होता है। कुंदरू की उन्नतशील किस्म (शुलभा) के प्रमुख कीट एवं बीमारियों का आक्रमण दिखायी देता है। इसके नियंत्रण हेतु रासायनिक दवा थायोमेथाक्सॉम 25%, W.G. 60-80 ग्राम की दर से एवं इमिडा क्लोप्रिड 17.81% एस.एल 60-80 मिली. की दर से एवं 100-150 लीटर पानी में घोल मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिये। कुदुरू की जैविक विधि द्वारा भी रोकथाम की जा सकती है। जिसके लिये गोमूत्र को नीम के काढ़े के साथ मिलाकर हर 15 दिन के अंतराल पर 2-3 बाद छिड़काव करना चाहिये।

कीट : कुंदरू उत्पादन के दौरान माहो, सफेद मक्खी, थ्रिप्स तथा मकड़ी का प्रकोप प्रमुख रूप से होता है। कुंदरू की उन्नतशील किस्में ''शुलभा'' में प्रमुख कीट एवं बीमारियों का आक्रमण कम दिखाई देता है। कीट नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाओं एवं जैविक दवाओं का उपयोग किया जा सकता है।

तुड़ाई : रोपण के 3 माह पश्चात् कुंदरू का फलन शुरू हो जाता है। फल तुड़ाई का कार्य हाथ द्वारा या हसिये के द्वारा किया जा सकता है।

उपज : रोपण के 2 माह पश्चात् इसमें फूल आना शुरू हो जाता है। अच्छी कृषि प्रबंधान के द्वारा प्रति हेक्टेयर 12-15 टन की औसत उपज प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष

कुंदरू एक अत्यन्त ही पौष्टिक एवं रूचिकर सब्जी है, जिसका उपयोग सब्जी, विभिन्न व्यंजनो तथा औषधि के रूप में किया जाता है। कुंदरू की फसल विशेष देखभाल के बिना भी विपुल उत्पादन देने वाली सब्जी है, जिससे कृषक कम लागत में अच्छी आमदनी अर्जित कर सकता है। कुंदरू की आवाक बाजार में अन्य सब्जियों के अपेक्षा बहुत कम होने के कारण बाजार में हमेशा माँग बनी रहती है तथा किसानों को अच्छी कीमत प्राप्त होता है।

❖❖